इकाई 4 अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' और उनकी कविता

इकाई की रूपरेखा

4.0 उद्देश्य

4.1 प्रस्तावना

4.2 पृष्ठभूमि

4.3 हरिऔध

4.3.1 जीवन परिचय

4.3.2 साहित्यिक रचनाएँ

4.4 हरिऔध का साहित्यः प्रमुख प्रवृत्तियाँ

4.5 प्रमुख कृतिः प्रिय प्रवास

4.6 सारांश

4.7 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

4.0 उद्देश्य

इस इकाई में हम हिंदी खड़ी बोली के प्रथम महाकवि अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध' का अध्ययन करेंगे। इकाई के अध्ययन के बाद आपः

- तत्कालीन विभिन्न परिस्थितियों के बारे में बता सकेंगे;
- अयोध्यासिंह उपाध्याय की संक्षिप्त जीवनी के बारे में बता सकेंगे;
- अयोध्यासिंह की रचनाओं का परिचय दे सकेंगे; तथा
- उपाध्याय जी की प्रमुख कृति 'प्रिय प्रवास' के संक्षिप्त कथासार और महत्व को जान सकेंगे

4.1 प्रस्तावना

इसमें हम प्रमुख रचनाकारों तथा उनकी रचनाओं का अध्ययन कर रहे हैं। खंड में आपने अब तक तीन महत्वपूर्ण रचनाकारों का अध्ययन कर लिया है। भारतेन्दु हरिशचंद्र द्वारा शुरू किये गये आंदोलन को बाद के रचनाकारों ने आगे बढ़ाया। साहित्य की विभिन्न विधाओं द्वारा परिवर्तन लाने का प्रयास अति महत्वपूर्ण था। जनता को जागरुक बना कर सड़ी गली परंपरा से समाज का उद्धार करना तथा विदेशी शासन से मुक्ति तत्कालीन सबसे बड़ी आवश्यकता थी। साहित्यकार जागरुक होता है उसमें चिंतन और मनन की शक्ति होती है। समाज और राष्ट्र के निर्माण के लिए वह लेखनी उठाता है। तत्कालीन लेखकों ने ऐसा ही किया। एक और खास बात उस समय के लेखकों में यह पाई जाती है कि विभिन्न विधाओं और विभिन्न विषयों में लेखन करते समय सभी जगह कुछ नयापन लाने की कोशिश की है। पिछली इकाइयों में आपने देखा कि किस प्रकार रचनाकार समाज एवं राष्ट्र के नवनिर्माण के लिए लेखन कर रहा था। गुप्त बंधुओं ने अपने-अपने स्तर पर यह कार्य किया। इस पाठ्यक्रम में हमने उन सभी महत्वपूर्ण रचनाकारों को लेने का

प्रयास किया है जिन्होंने साहित्यिक कृतियों द्वारा न केवल हिंदी साहित्य के भंडार को समृद्ध किया बल्कि राष्ट्र को प्रगति की ओर बढ़ने में सहायता भी की। दुर्भाग्य से कुछ महत्वपूर्ण रचनाकारों के कार्यों को नजरअंदाज किया गया। उनमें हरिऔध जी भी शामिल हैं। हम इस पाठ में इन्हीं महत्वपूर्ण रचनाकारों का अध्ययन करेंगे। तो आइए सर्वप्रथम तत्कालीन पृष्ठभूमि पर एक नजर डालें।

4.2 पृष्ठभूमि

उन्नीसवीं शती का पूर्वाद्ध राजनीतिक उथल पुथल का था। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का पहला बिगुल सन् 1857 की क्रांति से बज उठा था। अंग्रेजों की कूट नीति के फलस्वरूप भारतीयों में अच्छा तालमेल न रहने से क्रांति विफल नही। 1 नवंबर सन् 1857 ई. को लार्ड कैनिंका ने दरबार किया और इसी दरबार में महारानी विक्टोरिया का लुभावना घोषणापत्र पढ़ा गया। भारतीय जनता इस घोषणा के झांसे में आ गई थी। साहित्य में भी इसका प्रमाण मिलता है कि लेखकों ने महारानी की घोषणा का स्वागत ही किया था। सन् 1861 में इण्डियन कोंसिल एक्ट के तहत कुछ प्रशासनिक सुधार किये गये और सन् 1870 से स्वायत्त शासन का प्रारंभ भी हुआ। किंतु तत्कालीन सबसे बड़ी जरूरत थी कृषि पर ध्यान देने की। विश्व युद्ध के कारण महामारी आदि कई प्रकार की विपत्तियों से जनता तबाह हो गई थी। अंग्रेजों की नीतियों से यहाँ का उद्योग धंधा भी नष्ट हो गया था। लेकिन अगर स्थिति को संभाला जा सकता था तो वह केवल कृषि की बेहतरी पर ध्यान देकर ही। लेकिन सरकार ने इस और कुछ ध्यान नहीं किया। सन् 1860 से अकाल का जो सिलसिला शुरू हुआ तो वह सन् 1896-97 तक जारी रहा। देश के विभिन्न भागों में अकाल पड़ा। इन दैविक विपत्तियों से जनता को राहत दिलाने के लिए सरकार के पास कोई कार्यक्रम नहीं था। वह तो केवल अपने फायदे के लिए ही सोचती थी। एक ओर सरकार शोषण की नीतियों को लागू कर रही थी तो दूसरी ओर प्रबुद्ध भारतीयों में जागृति भी आ रही थी। भारत का बुद्धिजीवी वर्ग किसी ऐसे संगठन की तलाश में था जिससे मिलजुल कर बेहतरी के लिए कुछ काम किया जा सके। सन् 1885 में कांग्रेस की स्थापना इन्हीं उद्देश्यों के लिए हुई। इससे पूर्व एक महत्वपूर्ण घटना घट चुकी थी। इलबर्ट बिल के पास हो जाने से भारतीय मजिस्ट्रेटों पर से यह प्रतिबंध उठ चुका था कि वे यूरोपीय अधिकारियों के मुकद्में का फैसला नहीं कर सकते हैं। यह एक प्रकार से भारतीयों की जीत थी।

जिन वैज्ञानिक साधनों जैसे रेल, तार, डाक, आदि की सुविधाओं से अंग्रेजों ने शासन की पकड़ मजबूत करने के लिए उपयोग किया वही साधन भारतीयों के जागरण के लिए भी उपयोगी सिद्ध हुआ। सुरेन्द्रनाथ बनर्जी ने 1877, 78, तथा 84 में विभिन्न स्थानों का दौरा किया तथा शासन से टक्कर लेने के लिए जनता को प्रोत्साहित किया। कुछ यूरोपीय विद्वानों जिनमें मैक्समूलर, मोनियर, विलियम्स और सर विलियम्स जोन्स ने भारतीय संस्कृति पर शोध किया तथा उसे प्रचारित किया। उसकी महत्ता पर प्रकाश डाला। उनके कार्यों से यहां भारतीय चिंतनधारा यूरोपीय लोगों तक पहुंची वहीं भारतीयों के भी गौरवशाली अतीत को पाने की लालसा बढ़ी।

सामाजिक आंदोलनों में एक ओर भारतीय समाज में घिर आई बुराइयों पर प्रहार किया तो दूसरी ओर समाज को संगठित करने का कार्य भी किया। अतीत की बहुमूल्य धरोहर से अच्छी बातों को जनता तक पहुंचाने का कार्य भी किया गया था। धर्म और जाति पर कड़ा प्रहार किया गया। ब्रह्म समाज, आर्य समाज, थियोसोफिकल सोसाइटी आदि द्वारा भारतीय समाज को एक प्रकार से नवीनीकरण करने का प्रयास किया गया। इस प्रकार यह समय सब प्रकार से उथल-पुथल का था। ऐसी परिस्थिति में ही अयोध्यासिंह उपाध्याय का आविर्भाव हुआ।

4.3 'हरिऔध'

अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध हिंदी साहित्य के प्रमुख रचनाकारों में से हैं। हिंदी भाषा में खड़ी बोली को काव्य की भाषा के पद पर प्रतिष्ठित करने वाले ये ही थे। इन्होने परंपरा से चली आ रही इस धारणा को समाप्त किया कि अवधी और ब्रज में ही महाकाव्य रचे जा सकते हैं। खड़ी बोली की क्षमता को उन्होंने प्रमाणित कर दिखाया। कई महत्वपूर्ण काव्य रचनाओं से उन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि अब खड़ी बोली में भी महाकाव्य रचे जा सकते हैं। खड़ी बोली में छोटी-बड़ी कई महत्वपूर्ण काव्य रचना करके वे इस भाषा के प्रथम महाकवि बने। आइए उनकी जीवनी के बारे में जानें।

4.3.1 जीवन परिचय

अयोध्यासिंह उपाध्याय का जन्म उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ जिले के निजामाबाद नामक स्थान पर सन् 1865 ई. को हुआ। देश में घट रही घटनाओं का उन पर असर हुआ। साहित्यिक रचना की प्रतिभा उनमें थी। सामाजिक, राजनीतिक, उथल-पुथल ने उनके दिलो दिमाग को प्रभावित किया। प्रथमतः वे नाटक और उपन्यास लेखन की ओर आकर्षित हुए। फिर धीरे-धीरे कविता रचना की ओर बढ़े। सन् 1893 ई. उन्होंने 'प्रद्युम्न विजय' तथा सन् 1894 ई. में 'रूक्मिणी परिणय' नाटकों की रचना की। सन् 1834 में ही प्रथम उपन्यास 'प्रेमकान्ता' भी प्रकाशित हुआ। सन् 1899 ई. में 'ठेठ हिंदी का ठाठ' तथा सन् 1907 ई. में 'अधखिला फूल' प्रकाशित हुआ। काशी हिंदू विश्वविद्यालय में हिंदी में के अध्यापक पद पर भी काम किया। किंतु इस कार्य के लिए उन्होंने वेतन कभी नहीं लिया। आलोचना साहित्य की भी रचना की। कबीर वचनावली का संपादन करते हुए उन्होंने एक गद्य लेख लिखा जो आलोचनात्मक रूप से महत्वपूर्ण है। एक इतिहास ग्रंथ 'हिंदी भाषा और साहित्य का विकास' की भी रचना की।

काव्य रचना की शुरूआत इन्होंने ब्रजभाषा से ही की। रस कलश की रचनाओं से हमें स्पष्ट पता चलता है कि ब्रजभाषा पर इनका अच्छा अधिकार था। किंतु समय की आवश्यकता को उन्होंने तुरंत समझ लिया और इसीलिए खड़ी बोली में काव्य रचना आरंभ कर दी।

सन् 1924 ई. में से हिंदी साहित्य सम्मेलन के प्रधान पद पर भी नियुक्त हुए। सन् 1947 में छिहत्तर वर्ष की आयु में इनका देहावसान हुआ।

4.3.2 साहित्यिक रचनाएँ

हरिऔध ने गद्य पद्य दोनों में रचनाएँ कीं किंतु ख्याति उन्हें पद्य रचना में ही मिली। उनकी साहित्यिक रचनाएं निम्नलिखित हैं।

नाटक : 'प्रद्युम्न विजय' (1893 ई.)
'रूक्मिणी परिणय' (1894 ई.)

उपन्यास : 'प्रेमकान्ता' (1894 ई.)
'ठेठ हिंदी का ठाठ' (1899 ई.)
'अधखिला फूल' (1907 ई.)

काव्य : 'रसिक रहस्य' (1899 ई.)
'प्रेमाम्बुवारिधि' (1900 ई.)
'प्रेम प्रपंच' (1900 ई.)
'प्रेमाम्बु प्रश्रवण' (1901 ई.)
'प्रेमाम्बु प्रवाह' (1909 ई.)
'प्रेम पुष्पहार' (1904 ई.)

'उद्‌बोधन' (1906 ई.)
'काव्योपवन' (1909 ई.)
'प्रिय प्रवास' (1914 ई.)
'कर्मवीर' (1916 ई.)
'ऋतु मुकुर' (1917 ई.)
'पद्यमप्रसून' (1925 ई.)
'पद्यम प्रमोद' (1927 ई.)
'चोखे चौपदे' (1932 ई.)
'वैदेही बनवास' (1940 ई.)
'चुभते चौपदे'
'रस कलश'

बोध प्रश्न 1

निम्नलिखित प्रश्नों के दो तीन पंक्तियों में उत्तर लिखिए-

1) नवंबर सन् 1857 ई. राजनीतिक दृष्टि से क्यों महत्वपूर्ण है?

.....

.....

.....

2) सन् 1870 में अंग्रेजी सरकार ने शासन में किस प्रकार का परिवर्तन किया?

.....

.....

.....

3) मैक्समूलर आदि ने भारतीय संस्कृति को किस रूप में देखा।

.....

.....

.....

4) अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध का जन्म कहां और किस वर्ष हुआ?

.....

.....

.....

5) उपाध्याय जी ने कितनी अवस्था से साहित्य रचना शुरू की?

.....

.....

.....

.....

6) हरिऔध जी ने प्रथमतः किन विधाओं में साहित्य रचना की?

.....

.....

.....

7) हरिऔध ने किस विश्वविद्यालय में अवैतनिक रूप से अध्यापन का कार्य किया?

.....

.....

.....

8) हरिऔध जी द्वारा रचित इतिहास ग्रंथ का क्या नाम है?

.....

.....

.....

9) हरिऔध किस वर्ष हिंदी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष पद पर नियुक्त हुए?

.....

.....

.....

10) हरिऔध द्वारा रचित दो नाटक तथा एक उपन्यास के नाम लिखिए-

.....

.....

.....

11) निम्नलिखित रचनाओं का रचना काल कब है।

	रचना	**रचनाकाल**
1)	अधखिला फूल	
2)	रसिक रहस्य	
3)	प्रेम पुष्पाहार	
4)	प्रिय प्रवास	
5)	कर्मवीर	

4.4 हरिऔध का साहित्य : प्रमुख प्रवृत्तियाँ

हिंदी साहित्य के इतिहास में द्विवेदी युग अत्यंत महत्वपूर्ण है। साहित्य के क्षेत्र में इस समय एक परिवर्तन उपस्थित हुआ। पुरानी परंपरा को त्याग कर नई विचारधारा का समावेश हुआ। साहित्यकारों ने देखा कि केवल कल्पना लोक की बातों को लुभावने शब्दों

से प्रस्तुत करना ही साहित्य नहीं है बल्कि जीवन की वास्तविकता पर आधारित साहित्य ही सच्चा साहित्य है। उस साहित्य का कोई मूल्य नहीं जिसमें कोई सच्चाई प्रकट न की गई हो और जिससे व्यक्ति एवं समाज का कोई लाभ न हो। ईश्वर आदि की कल्पना कर बहुत दिनों से लुभावने साहित्य की रचना की गई। लेकिन ऐसे साहित्य से न तो व्यक्ति को लाभ हुआ और न ही समाज को। अतः सामाजिक आवश्यकता को सामने रख कर ही साहित्य रचना की शुरूआत हुई। हरिऔध भी इसी परिवर्तन काल के कवि हैं। उन्होंने तत्कालीन साामाजिक स्थिति को देखते हुए अपने काव्य की रचना की। परंपरा से चले आ रहे कृष्ण के ब्रह्मस्वरूप को छोड़कर उसे उन्होंने एक आदर्श व्यक्ति, एक आदर्श नेता तथा एक लोकोपकारक मानव के रूप में चित्रित किया। रीतिकालीन बनावटीपन के घेरे से निकलकर वास्तविकता पर आधारित काव्य की रचना ही उनका मुख्य उद्‌देश्य रहा। उनका नायक कोई अदृश्य शक्ति संपन्न महामानव नहीं बल्कि इसी धरती पर बसने वाला एक साधारण मानव है और उस साधारण मानव में जनता की भलाई करने की इच्छा है। कृष्ण के लोकोपकारी रूप की रचना के पक्ष में दिया गया उनका यह मंतव्य अत्यंत महत्वपूर्ण है तथा उनकी प्रगतिशीलता का परिचालक है।

''हम लोगों का यह संस्कार है वह यह कि जिनको हम अवतार मानते हैं उनका चरित्र जब कहीं दृष्टिगोचर होता है तो हम उसकी प्रति पंक्ति में या न्यून से न्यून उसके प्रति पृष्ठ में ऐसे शब्द या वाक्य अवलोकन करना चाहते हैं जिसमें उसके ब्रह्मत्व का निरूपण हो। मैंने श्रीकृष्ण को इस ग्रंथ में एक महापुरुष की भांति अंकित किया है, ब्रह्म करके नहीं। मैंने भगवान श्रीकृष्ण का जो चरित्र अंकित किया है, उस चरित्र का अनुधावन करके आप स्वयं विचार करें कि वे क्या थे, मैंने यदि लिखकर बताया कि वे ब्रहम थे और तब आपने उनको पहचाना तो क्या बात रही। आधुनिक विचार के लोगों को यह प्रिय नहीं कि आम पंक्ति-पंक्ति में तो भगवान् श्रीकृष्ण को ब्रह्म लिखते चलें और चरित्र लिखने के समय - ''कर्तुमकर्तुमन्यायकर्तुसमर्थः प्रभुः'' के रंग में रंग कर ऐसे कार्यों का कर्ता उन्हें बनावें कि जिनके करने में एक साधारण विचार के मनुष्य का भी घृणा होवे। संभव है कि मेरा यह विचार समीचीन ही समझा जावे परंतु मैंने उसी विचार को सम्मुख रखकर इस ग्रंथ को लिखा है, और कृष्ण चरित्र को इस प्रकार किया जिससे कि आधुनिक लोग भी सहमत हों।''

वास्तव में यह समय की मांग थी। उन्नीसवीं सदी में जो एक नवजागरण की लहर आई तो उस समय चिंतकों के लिए भी यह उद्‌देश्य सामने ला दिया कि सब प्रकार के परिवर्तन की आवश्यकता है। हरिऔध ने भी समय की नब्ज को पहचाना। समय की मांग और आवश्यकता के अनुरूप काव्य रचना की। उन्होंने कृष्ण के ब्रह्म स्वरूप को बिल्कुल ही नकार दिया। उनके काव्य का नायक एक ऐसा महापुरुष है जो जन-जन का कल्याण चाहता है। उसका चरित्र समाज का ही एक अंग है न कि विशिष्ट। उसे समाज के प्रत्येक सदस्य के दुःख-दर्द का एहसास है। वह सबकी दुर्बलताओं का भी पहचानता है। समाज के उत्थान के लिए वह स्वयं ही कष्ट झेलने को सदा तत्पर है। उसके अंदर जो प्रेम है जो दया तथा सेवा भावना निहित है उससे दूसरों को भी प्रेरणा मिलती है। उसके आचरण, व्यवहार, रीति-नीति एवं समुचित कार्य से लोगों को सद्‌गति पर चलने की प्रेरणा मिलती है। हरिऔध जी की प्रमुख रचना है ''प्रिय प्रवास''। इसमें हम हर जगह यह पायेंगे कि कवि ने कृष्ण को ऐसे नेता के रूप में प्रस्तुत किया है जो साधारण मानव होते हुए भी संपूर्ण समाज के कल्याण के लिए ही कार्य करता है। निम्न उदाहरण को ध्यान से पढ़िए -

अपूर्व आदर्श दिखा नरत्व का।
प्रदान की है पशु को मनुष्यता।
सिखा उन्होंने वित्त की समुच्चता।
बना दिया सभ्य समग्र गोप को।
थोड़ी अभी यदि है उनकी अवस्था।
तो भी नितांत रत वे इस कर्म में हैं।

हरिऔध जी की रचनाओं का अध्ययन करने पर यह स्पष्ट दिखाई देता है कि उनके साहित्य में परिवर्तन का स्वर सब जगह है। कवि विभिन्न प्रवृत्तियों को समावेश कर एक नए समाज की कल्पना में मग्न है। वह किसी भी पुरातनपंथी व्यवस्था को समर्थन नहीं देता। सच्चा साहित्य वही है जो जन कल्याण पर आधारित हो। इस युग में ऐसे ही साहित्य को लोकप्रियता भी मिलती जो समाज के लिए उपयोगी होता। विभिन्न राजनीतिक सामाजिक एवं आर्थिक कारणों से संपूर्ण राष्ट्र में उथल-पुथल की स्थिति थी। साहित्य के क्षेत्र में भी क्रांतिकारी परिवर्तन आ रहा था। अंग्रेजी शिक्षा के कारण भारतीय समाज में एक परिवर्तन का दौर शुरू हो गया था। विभिन्न सामाजिक संगठनों के माध्यम से सामाजिक समस्याओं पर कुठाराघात हो रहा था। द्विवेदी युग में अधिकांश रचनाकारों में अभूतपूर्व आत्मविश्वास भर गया था।

वृद्ध विवाह तत्कालीन समाज की सबसे बड़ी समस्याओं में था। कभी आर्थिक कारण से तो कभी लड़कियों की संख्या अधिक होने से माता-पिता अपनी पुत्रियों का अनमेल विवाह कर देते थे। अधिक उम्र के व्यक्ति से विवाह होने पर प्रायः लड़कियों का दाम्पत्य जीवन नीरस बन जाता था। इस समस्या को कविवर हरिऔध जी ने गहराई से परखा था। ''वृद्ध विवाह'' रचना में हरिऔध जी ने इसी समस्या पर लोगों का ध्यान आकृष्ट किया है।

जो बड़े-बड़े गुडियों को ठगें।
पाउडर मुंह पर न अपने वे मलें।
ब्याह के रंगीन जामा को पहन।
बेईमानी का पहन जामा न लें।
जो कलेवा काल का है बन रहा।
वह बने खिलती कली का भौर क्यों।
और सिर पर रख बनी का बन बना।
बेहयाओं का बने सिरमौर क्यों।
छाँह भी तो वह नहीं है काड़ती।
क्योंकि बन सकता नहीं अब दैव तू।
ठीठ बूढे लाद बोझा लाड़ का
क्यों बना अलबेलियों का बैल तू।
तब भला क्या फेर में छवि के पड़ा।
आँख से जब देख पाता नू नहीं।
तब छछूंदर का बना फिरता रहा।
जब छबीली छाँह छू पाता नहीं।

एक युवती की वृद्ध के साथ विवाह होने पर क्या दयनीय स्थिति होती है उसका यथार्थ चित्रण उपरोक्त पंक्तियों में किया गया है। किस प्रकार सभी प्रकार के लाज शर्म को छोड़ कर वृद्ध युवती के साथ विवाह करते हैं। कवि यह प्रश्न समाज के सामने रखता है। और परोक्ष रूप से इस पर अंकुश लगाने का संकेत करता है।

एक ओर जहां अधिक धन के लालच में माता-पिता लड़कियों को बूढ़े के गले मढ़ देते थे वहीं दूसरी ओर दहेज न दे सकने पर अनमेल विवाह हो जाता था। अपने पुत्र के लिए दहेज न मिलने पर माता-पिता विवाह तोड़ देते थे। यह समस्या इस रूप में बढ़ी कि लड़कियों का जन्म होना ही अपशकुन माना जाने लगा। कवि इस बात की ओर भी ध्यान दिलाना चाहता है कि जिन्हें हम उच्च वंश का मानते हैं उन्हीं लोगों ने ऐसी अमानवीय प्रथा की शरूआत की। ''स्नेही'' नामक रचना से उदाहरण दृष्टव्य हैः

यह दहेज की आग सुवंशों ने दहकाई।
प्रलयवाही सी वही आज चारों दिशा छाई।
घर उजाड़ बना रही, कर रही सफाई।
तप रहे हम मुदित, समझते होली आई।

बाल विवाह एक अलग समस्या थी। कम उम्र में जब बालक को इस बात का ज्ञान भी नहीं होता था कि विवाह किसे कहते हैं, ऐसे में उनकी शादी कर दी जाती थी। एस प्रथा के कारण कई सामाजिक समस्याएँ उठ खड़ी होती थी। हरिऔध ने इस समस्या की ओर भी हमारा ध्यान आकृष्ट किया है। ''बाल विवाह'' रचना से यह अंश देखिए-

बाल विवाह रोक हम देते यदि हमको मिलते अधिकार।
वृद्ध ब्याह का किन्तु देश में कर देते हम खूब प्रचार।
क्योंकि साठ के होकर भी दूल्हा अभी बनेंगे हम।
किसी बालिका से विवाह कर इसमें नहीं सनेंगे हम।

भारतीय समाज में पर्दा-प्रथा कब और किस रूप में शुरू हुई यह शोध का विषय है। लेकिन इस पर्दा-प्रथा ने किस प्रकार नारी के विकास की गति को रोक दिया वह हमसे छुपा नहीं। नारी को केवल उपभोग की वस्तु मान लिया। पर्दों के अंदर रहना उनकी नियति बन गई। वे घूंघट के बिना कहीं आ जा नहीं सकती थीं। घर के अंदर भी उसे घूंघट तान कर रहना होता था। चाहे इस प्रथा से नारी को किसी भी प्रकार का कष्ट हो लेकिन वह इसके खिलाफ बोल नहीं सकती थी। यही कारण है कि उसका सर्वांगीण विकास रूक गया। वह घुट-घुट कर रहती। स्वतंत्रता छिन जाने पर वह समाज की किसी भी प्रगति में हाथ नहीं बटा सकती थी। इस प्रथा से एक प्रकार से समाज के आधे हिस्से को जहां उसके अधिकार से वंचित कर दिया गया वहीं समाज की भी हानि हुई। हरिऔध विचारशील कवि थे। इन सभी सामाजिक बुराइयों को उन्होंने बारीकी से परखा था। यही कारण है कि उसका वास्तविक चित्रण वे कर पाए। यह अंश देखिएः

जीवन, जीवन के सुख को, अपने ही से खोता है।
मृदुता का कठोरता से, दुख-भूल मिलन होता है।
कितनी ही कोमल कलियां, मुख को भी खोल न पातीं,
हो दलित कठोर करों से, मुरझा कर हैं झड़ जाती।
शुचि ज्ञानभानु उर में ही, सहा छिपा रह जाता।
उसका प्रकाश अवनी में, है कभी न होने पाता।
गंगा जमुना की धारा, बहती, सूने सदनों में।
परदे के भीतर सागर, लहराता है नयनों में।

कवि ने नारी के दुःख का कितना मार्मिक रूप प्रस्तुत किया है। अपने दुःखों को समेटे हुए नारी घुलती रही है। वह अपने आंसुओं को भी दिखा नहीं पाती। दिन रात उसके नयनों से अश्रुधारा बहती रहती है मानों गंगा तथा यमुना नदियों की धारा बह रही हो। परदे के पीछे दुःख का अपार सागर हिलोरे लेता रहता है। उसके हृदय की बात जुबान पर आ ही नहीं पाती। कोई उसके चेहरे के भाव को पढ़ नहीं सकता। कारण वह पर्दे में कैद है। इस प्रकार जाने कितनी महिलाएं अपनी आशा आकांक्षाओं को दबाते हुए समय की धारा में समाप्त हो गई, किसी ने उनकी सुध न ली। कवि इस कवितांश में यही कहना चाहता है कि नारी को इस दुर्दशा से बाहर निकालना होगा। उसे सब प्रकार की स्वतंत्रता देनी होगी। आज जब हम चारों ओर नारी मुक्ति आंदोलन का नारा बुलंद होते हुए देखते हैं तो हमें यह भी हमेशा याद रखना चाहिए कि इस आंदोलन की शुरूआत उन्नीसवीं सदी में ही हरिऔध जैसे कवियों ने ही की थी। यह नवजागरण का ही रूप था। कवि समाज और राष्ट्र के प्रति सजग था। वह हर स्तर पर एक नए युग का सूत्रपात करना चाहता था। समाज के प्रत्येक हिस्से को सुदृढ़ बनाने के लिए आवश्यक था कि स्त्री अपने अधिकार को समझे और समाज और राष्ट्र के विकास में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चले।

भारतीय समाज की सबसे बड़ी कमजोरी है ''जाति व्यवस्था''। यह विडंबना ही है कि संसार का गुरु कहलाने वाला देश भारत जिसने अनेकों महापुरुषों को जन्म दिया उसी

भारत में मानवता की जितनी अवहेलना हुई वह विश्व के किसी हिस्से में नहीं हुई। और इस भेदभाव का सबसे पक्का आधार है जाति व्यवस्था। आज भी, इतनी प्रगति के बाद भी, बाइसवीं सदी की ओर बढ़ने वाले मनुष्य की सभ्यता में यह जाति व्यवस्था रूपी कोढ़ विद्यमान है। आज भी इस व्यवस्था के तहत अनगिनत लोगों को कष्ट उठाना पड़ रहा है। भारतीय समाज में यह व्यवस्था इतनी गहराई तक समाई हुई है कि इससे उबरने में और भी समय लगेगा, लेकिन इसके लिए यह भी आवश्यक है कि इस आधारहीन व्यवस्था को समूल नष्ट किया जाए हमें इस बात पर भी गहराई से विचार करना होगा कि इस व्यवस्था से कितनी हानि हो रही है। इस आधारहीन व्यवस्था के कितने भयानक परिणाम होते रहे हें और आज भी हो रहे हैं उसे हम भलीभंति जानते हैं। किंतु इस सड़ी-गली व्यवस्था के विरूद्ध आरंभ से ही आवाजें उठती रहीं। उन्नीसवीं सदी में तो तमाम बुद्धिजीवी लेखकों ने इस व्यवस्था के खिलाफ अपनी लेखनी उठाई। भारतेन्दु से लेकर वर्तमान सदी तक लेखक ने गद्य-पद्य के माध्यम से इस व्यवस्था के विरूद्ध कुठाराघात किया। हरिऔध जी ने भी इस सामाजिक विषमता मूलक व्यवस्था के विरूद्ध कड़े शब्दों में आवाज उठाई। यह अंश पढ़िए -

सामाजिक कतिपय कुत्सित नियम।
अति संकुलित छूतछात के विचार।
हर ले रहे हैं आज हमारा सर्वस्व।
गले का भी आज छीन रहे हैं हार।
जिन्हें हम छूते नहीं समझ अछूत।
जो हैं मान गए सदा परम पतित।
पास उनके होता क्या नहीं हृदय।
वेदनाओं से वे होते क्या नहीं व्यथित।

यह भारतीय समाज में कुत्सित नियम के रूप में चल रहा है। मानव-मानव में भेद इतना कि एक-दूसरे को छू नहीं सकते। दूसरी ओर एक और भी महत्वपूर्ण बात कवि कहता है कि जिनको हम अपने से दूर रखते हैं जिन्हें छूने से भी कतराते हैं उन्हीं लोगों का सर्वस्व हम लूट भी लेते हैं। जब अवसर आता है उनके गले का हार भी छीन लेते हैं। आगे कवि हृदय की बात भी कहता है। वह यह भी कहता है कि सभी मानव एक है, क्योंकि जिन्हें हम पतित माने हैं उनके पास भी वैसा ही हृदय है जैसा सभी मानवों के पास। उसमें भी वही धड़कन है उनमें भी सभी प्रकार के भाव उमड़ते हैं। इसलिए सभी मानव एक समान हैं। दलित कहे जाने वालों को उसी प्रकार के सुख दुःख का अनुभव होता है जैसा बाकी लोगों को अतः निष्कर्ष यही है कि सभी मानव की जाति एक है।

समाज में व्याप्त दो बड़ी बुराइयों ''दलित समस्या'' तथा ''नारी समस्या'' को कवि ने अपनी कविताओं में व्यक्त किया है। साथ ही बहुत सी छोटी-छोटी बुराइयों को भी उन्होंने चित्रित किया। लोभी और लालची व्यक्ति समाज के लिए हानिकारक होते हैं। वे अपनी इस प्रवृत्ति से समाज के लोगों को परेशानी में डाल कर खुद मौज उड़ाते हैं। चौपदा में कवि ने ऐसे मनोवृति वाले व्यक्ति को खूब फटकारा है -

है किसी काम का न लाख टका
रख सके जो न ध्यान चिता पट का,
क्यों न बन जायेंगे टके के हम,
दिल टके पर अगर रहा अटका।

कई बार समाज में अधिक उम्र के व्यक्ति अजीब सी वेषभूषा धारण कर लोगों को आकृष्ट करने का प्रयत्न करते हैं। ये खुद को अधिक जवान दिखने की चेष्टा में अपनी ही हंसी उड़वाते हैं। कवि ने ऐसे व्यक्तियों पर चौपदे लिख कर व्यंग्य कसा है। एक वृद्ध व्यक्ति का बहुरूपियापन देखिए -

आंख में सूरमा लगाया है गया,
है घड़ी की होंठ पर न्यारी फबन,
भूलती हैं चितवनें भोली नहीं
तन हुआ बूढ़ा, हुआ बूढ़ा न मन।

उनके उपन्यासों में भी कहीं-कहीं चौपदों द्वारा सामाजिक समस्या को उठाया गया है। धर्म के ठेकेदारों को उन्होंने सावधान करते हुए लिखा-

कितने ही घर हैं पाप न घाले।
कितने ही किये हैं मुंह काले।।
पाप की बान है नहीं अच्छी।
ओ न पापों से कांपने वाले।।
सोते की तेल कान में डाले।
धर्म के हैं तुम्हें पड़े लाले।।
नाव डूबेगी बीच धार मे तेरी।
ओ धरम के पालने वाले।।

("अधखिला फूल")

अधखिला फूल में उन्होंने "ढोंगी साधुओं" को फटकारा।

"भभूत लगाने से क्या होगा? गेरूआ पहनने से क्या होगा? घर द्वार छोड़ने से क्या होगा। लंगोटी किस काम आवेगी? तुंबा क्या करेगा? साधु होने ही से क्या, जो दूसरों का दुःख मैं न दूर करूँ, दुखिया को मैं सहारा न दूं। जिस काम के करने से देश का भला हो उसमें जी न लगाऊँ।"

उनका मानना है कि झूठा साधू बनने से अच्छा है जरूरतमंद लोगों की सेवा करना। साथ ही ऐसे काम करें जिससे देश की भलाई हो सके।

राष्ट्रीय चेतना उनकी कविता का दूसरा उद्देश्य है। "चुभते-चौपदे" संग्रह में "क्या से क्या हो गये" नामक कविता में उन्होंने अपने अतीत को याद दिलाया है। वे चाहते हैं कि अतीत को ध्यान में रखकर भारतवासी अपनी वर्तमान दुर्दशा को देखें और सुधार करें। यह उदाहरण देखिए-

धूल उनकी है उड़ाई जा रही
धूल में मिल धूल वे हैं फांकते
सब जगत मुंह ताकता जिनका रहा
आज वे हैं मुंह पराया ताकते
बन गए हैं आंगुनों की खान वे
गुन अनूठे हाथ से छन छन छिने
डालते थे जान वे बेजान में
आज वे हैं जानवर जाते गिने

अंग्रेज देश के शासक बन बैठे थे। देश का शोषण कर उन्होंने भारतीय जनता को कंगाल बना दिया था। शासन की क्रूरता का वर्णन कर कवि अंग्रेजी शासन के खिलाफ उनमें जोश भरना चाहता है ताकि वे विद्रोह कर सकें। वे चाहते थे कि फिरंगी देश को छोड़ कर जाएं और भारतीयों का अपना राज स्थापित हो।

घोंटते जो लोग हैं उसका गला।
क्यों नहीं उनका लहू हम गार लें।।
है हमारी जाति का दम घुट रहा।

हम भला दम किस तरह से मार लें।
सोज समान अब करो सुख का।
दुःख बहुत दिन तलक रहे चिमटे।।
गा चलो गीत जाति हित के अब।
गा चुके कम न दादरे खेमटे।।

इस प्रकार अपनी गद्य-पद्य रचनाओं में कविवर हरिऔध जी ने विभिन्न सामाजिक-राजनीतिक समसामयिक समस्याओं को स्थान दिया और राष्ट्रीय चेतना एवं नवजागरण के लिए कार्य किया।

बोध प्रश्न 2

दो तीन पंक्तियों में उत्तर लिखिए-

1) वृद्ध विवाह से संबंधित हरिऔध जी की रचना का नाम क्या है? इस रचना में उन्होंने क्या संदेश दिया है?

.....

.....

.....

2) ''सनेही'' नामक रचना की विषयवस्तु क्या है?

.....

.....

.....

3) बाल विवाह के संबंध में कवि की क्या राय है?

.....

.....

.....

4) ''पर्दा प्रथा'' के बारे में कवि ने क्या विचार रखा?

.....

.....

.....

5) जाति व्यवस्था पर प्रहार से संबंधित हरिऔध जी की रचना की चार पंक्तियाँ लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

6) ''क्या से क्या हो गये'' रचना के माध्यम से कवि क्या संदेश देना चाहता है?

.....

.....

.....

अभ्यास

अ) सामाजिक समस्या के बारे में हरिऔध जी के विचारों को दस पंक्तियों में स्पष्ट कीजिएः

.....

.....

.....

.....

4.5 प्रमुख कृति : प्रिय प्रवास

हमने देखा कि अयोध्या सिंह उपाध्याय ''हरिऔध'' ने पच्चीस वर्ष की उम्र से साहित्य रचना शुरू की। उन्होंने प्रथमतः नाटक तथा उपन्यासों की रचना की। फिर कविता रचना की ओर उनका ध्यान गया। ब्रजभाषा से आरंभ कर उन्होंने खड़ी बोली में विभिन्न विषयों पर काव्य रचना की। समसामयिक विषयों पर लेखन कर उन्होंने देश की सामाजिक एवं राजनीतिक परिवर्तन में अपना योगदान दिया। सारी कृतियों में सबसे प्रसिद्ध रचना है ''प्रिय प्रवास''। इसी रचना के माध्यम से वे हिंदी साहित्य के इतिहास में सदा के लिए अमर हो गए। पौराणिक विषय पर आधारित होते हुए भी इस रचना की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें युगानुकूल समस्या को उठाया गया है। कथा पुरानी है लेकिन उद्‌देश्य नयापन लिए हुए है। परंपरा से हट कर उन्होने एक नया प्रयोग किया। इस रचना का प्रकाशन सन् 1914 में हुआ। इस रचना की एक और खासियत यह है कि इसे खड़ी बोली का प्रथम महाकाव्य होने का गौरव प्राप्त है। काव्य का वर्ण विषय आध्यात्मिक तथा लौकिक प्रेम है किंतु उसे समसामयिक संदर्भ में रख कर लोक पक्ष तथा लोक कल्याण को ही अधिक महत्व दिया गया है। वास्तव में ''प्रिय प्रवास'' की रचना के पीछे तत्कालीन कारण है। द्विवेदी युग में जिस आधुनिकता का आगमन हो रहा था उससे परंपरागत काव्य रचनाओं का आधार कम होता जा रहा था। सुधारात्मक एवं जन-जागरण आंदोलन के कारण सभी क्षेत्र में बदलाव आ रहा था। उस समय के सभी बुद्धिजीवियों को भारत के अतीत के सांस्कृतिक, सामाजिक एवं अन्य संदर्भों के बारे में एक नए रूप से विचार करने के लिए बाधित कर दिया था। लम्बी पराधीनता के कारण भारतीय अपने विचारों में संकुचित हो गए थे। स्वतंत्र चिंतन का उनका आधार खो गया था। लेकिन अंग्रेजी शिक्षा के कारण तथा स्वयं यहां के विचारकों के विचारों का पुनर्मूल्यांकन करने के कारण नवजागरण की लहर आई।

कोई कवि अपने परिवार, समाज एवं तत्कालीन भिन्न परिस्थितियों से प्रभावित होकर काव्य रचना करता है। ''प्रिय प्रवास'' रचना के पीछे कोई कारण है। हरिऔध का परिवार कृष्ण भक्त था। कृष्ण के चरित्र का गुणगान उन्होंने बचपन से ही सुन रखा था। उनके मन में एक अलौकिक शक्ति के रूप में कृष्ण की छवि का निर्माण हो गया था। किंतु कवि केवल कृष्ण के अलौकिक रूप से संतुष्ट नहीं थे। उनके मन में बार-बार यह प्रश्न उठता था कि जो अलौकिक और शक्तिमान है तो उसे जनकल्याण भी करना चाहिए। इस भावना ने ही उनके हृदय में कृष्ण का लोक कल्याणकारी रूप चित्रित करने को उत्सुक किया। एक

और दुर्घटना ने उन्हें इस रचना के लिए प्रवृत्त किया। सन् 1905 में अचानक कवि की पत्नी का निधन हो गया। उनके जीवन में एक रिक्तता उत्पन्न हो गई थी। इस रिक्तता को उन्होंने प्रिय प्रवास की रचना करके पूरा किया। उनकी मूक व्यथा ने इस रचना में स्थान पाया। जिस प्रकार कृष्ण का मथुरा गमन सभी ब्रजवासियों के लिए व्यथा का कारण बना, उसी प्रकार पत्नी के बिछोह ने कवि को सदा के लिए विरह की पीड़ा से युक्त कर दिया। किंतु जब कवि ने इस महाकाव्य की रचना की तो उनकी पीड़ा में थोड़ी कमी आई। साथ ही कवि व्यक्तिगत पीड़ा से उठ कर समष्टिगत पीड़ा में शामिल हो गया। उनके कृष्ण अब साधारण मानव नायक बन गए जो सभी जनों का कल्याण चाहते हैं।

यह महाकाव्य सत्रह सर्गों में विभक्त है। संक्षिप्त रूप से सर्गगत् कथा इस प्रकार है -

पहला सर्ग संध्या का वर्णन किया है। कृष्ण संध्या समय गोचारण कराने के बाद अपने ग्वाल-बाल सखाओं के साथ गोकुल ग्राम की ओर लौट रहे हैं इस दृश्य को देखने के लिए सारा गांव उमड़ पड़ता है। यहां तक कि लोग अपने दैनिक कार्य भी भूल जाते हैं। सब भाव विभोर हो कृष्ण के इस मनमोहककारी रूप को देखना चाहते हैं। कृष्ण की वंशी सुनते सब दौड़ पड़ते हैं -

सकल वासर आकुल से रहे।
अखिल मानव गोकुल ग्राम के।
अब दिनान्त विलोकित ही बढ़ी।
ब्रज-विभूषण दर्शन लालसा।।
सुन पड़ा स्वर ज्यों कल वेणु का
सकल ग्राम समुत्सुक हो उठा।

दूसरे सर्ग का आरंभ रात्रि के आधे पहर बीत जाने पर होता है। सारा गोकुल गांव सो रहा होता है। रात्रि में ठीक दोपहर बीत जाने पर दुर्देव द्वारा यह घोषणा सुनाई जाती है कि कृष्ण कल मथुरा चले जायेंगे। यह खबर तेजी से सारे गांव में फैल जाती है सारे ग्रामवासियों को इस सूचना से गहरा आघात पहुंचता है। वे व्याकुल हो जाते हैं -

निमिष में यह भीषण घोषणा।
रजनि अंक कलंकित कारिणी।
मृदु समीरण के सहकार से
अखिल गोकुल ग्राममयी हुई।
कमल लोचन कृष्ण वियोग की
अशनि पात सभा यह सूचना।
परम आकुल गोकुल के लिए।
अति निष्टकारी घटना हुई।

तीसरे सर्ग में नंद बाबा की व्याकुलता तथा माता यशोदा द्वारा कृष्ण की कुशलता के लिए मनौतियां मानने का वर्णन है -

प्रमुदित मथुरा के मानवों को बना के
सकुशल रह के औ विघ्न बाधा बचा के।
निज प्रिय सुत दोनों साथ लेके सुखी हो।
जिस दिन पलटेंगे गेह स्वामी हमारे।
प्रभु दिवस उसी में सात्विकी रीति द्वारा।
परम शुचि बड़े ही दिव्य आयोजनों से।
विधि-सुदित करूंगी मंजु पादाश्जा पूजा।
उपकृत अति ही हो के आपकी सत्कृपा।

चौथे सर्ग में राधा के मनमोहक रूप को प्रस्तुत किया गया है तथा कृष्ण के प्रति उनके अपार प्रेम को दर्शाया गया है। राधा अपना सर्वस्व कृष्ण के प्रेम पर न्योछावर करती है-

हृदय चरण में तो मैं चढ़ ही चुकी हूँ।
सविधि वरण की थी कामना और मेरी।।

पांचवें सर्ग में पूरे गोकुल ग्राम में व्याप्त शोक का वर्णन किया गया है। कृष्ण मथुरा चले गए। सबसे अधिक दुःखी उनकी माता यशोदा है -

अहह दिवस ऐसा हाय। क्यों आज आया?
निज प्रिय सुत से जो मैं जुदा हो रही हूँ?
अगणित गुणावली प्राण से नाच प्यारी।
यह अनुपम थाली मैं तुम्हें सौपती हूँ।

छठे सर्ग में भी सारे गोकुल ग्रामवासियों के विरह का ही वर्णन है। विशेषरूप से माता यशोदा तथा राधा के दुःख को कवि ने बड़े ही मार्मिक रूप में प्रस्तुत किया है।

सातवें सर्ग में यह दिखाया गया है कि जब बाबा नंद मथुरा से अकेले गोकुल लौट आते है तो माता यशोदा अपने लाल के बारे में उनसे तरह-तरह के प्रश्न करती हैं- वात्सल्य रस का अनुपम वर्णन इस सर्ग में देखने को मिलता है-

प्रिय पति वह मेरा प्राण प्यारा कहां है।
दुःख जलधि निमग्ना का सहारा कहां है।
अब तक जिसको मैं देख के जी सकी हूँ।
वह हृदय हमारा नेत्र तारा कहां है।

आठवें सर्ग में गोकुलवासियों द्वारा बीते हुए दिनों की याद करते हुए दिखया गया है। ग्रामवासियों को विश्वास हो जाता है कि अब कृष्ण वापस नहीं आयेंगे तो वे उनके साथ की गई लीलाओं को याद करते हुए एक दूसरे को सुनाते है और इसी में संतोष पाने की चेष्टा कर रहे हैं।

नवें सर्ग में स्वयं श्री कृष्ण द्वारा गोकुल की याद का दर्शाया गया है। राज के प्रशासन के कार्यों से मुक्ति मिलने पर कृष्ण गोकुल में बिताए दिनों की याद करते हैं और विरह में खो जाते है। ऐसे समय में उद्धव उन्हें समझाने की चेष्टा करते हैं। इस सर्ग में प्रकृति का बहुत ही मनोहारी रूप प्रस्तुत किया गया है।

दसवें सर्ग में उद्धव का गोकुल आगमन तथा यशोदा नंद द्वारा श्री कृष्ण के बाल क्रीड़ाओं का वर्णन है। यशोदा अपने लाल की कुशलता पूछती है-

मेरे-प्यारे सकुशल सुखी और सानंद तो है।
कोई चिंता मलिन उनको तो नहीं है बनाती?

ग्यारहवें सर्ग में उद्धव द्वारा गोकुल वासियों को सांत्वना तथा उपदेश देने का वर्णन है। इसी सर्ग में कालीया मर्दन घटना का वर्णन है। इस सर्ग की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि कवि ने श्रीकृष्ण के लोकोपकारक रूप का चित्रण किया है। श्री कृष्ण एक जनसामान्य के नेता के रूप में प्रण करते हैं -

अतः करूंगा यह कार्य स्वयं।
स्व-हस्त में दुर्लभ प्राण को लिये।
x x x
प्रवाह होते तक शेष-श्वास के।
स-शक्त होते तक एक लोभ के।।
किया करूंगा हित सर्व-भूत का।

बारहवें सर्ग में भी श्री कृष्ण को जन नेता तथा लोक कल्याणकारण रूप में प्रस्तुत किया गया है। राजा का पुत्र होने के बावजूद श्री कृष्ण घमंडी नहीं थे वे सदा जनता की भलाई चाहते थे-

थे राज पुत्र उनमें मद था न तो भी।
वे दीन के सदन थे अधिकांश जाते।
बातें मनोरम सुना दुख जानते थे।
औ ये विमोचन उसे करते कृपा से।।

तेरहवें सर्ग में भी श्री कृष्ण को एक सच्चा समाज सेवी चिंतक तथा जननायक के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

तदपि चित बना है, श्याम का चारू ऐसा।
वह निज-सुहरदों से थे स्वयं हार खाते।
वह कतिपय जीते खेल को थे जिताते।
सफलित करने को बालकों में उमंगें।

चौदहवां सर्ग गोपी-उद्धव संवाद पर आधारित है। इसमें युगानुकूल संवाद रखने का प्रयत्न किया गया है। उद्धव गोपिकाओं को यह बताने का प्रयत्न करते हैं कि प्रेम में कुछ नहीं रखा। यह व्यर्थ की बात है। दूसरी ओर गोपियां प्रेम की सार्थकता साबित करती हैं।

पन्द्रहवें सर्ग में कवि ने कृष्ण के विरह में पागल गोपिकाओं का सजीव एवं मार्मिक चित्रण किया है। गोपिकाएं कहती हैं कि जिसने दुःख की पीड़ा स्वयं न झेली हो वह उसे क्या जानेगा-

जो होता है सुखित, उसको अन्य की वेदनाएं।
क्या होती है विदित वह जो भुक्त भोगी न होवे।

सोलहवें सर्ग उद्धव-राधा संवाद का वर्णन है। एक ओर उद्धव अपने ज्ञान से राधा के प्रेम को व्यर्थ साबित करना चाहते हैं तो दूसरी ओर राधा अपने प्रेम की महानता एवं उपयोगिता को बताना चाहती है। अंत में राधा की जीत होती है। उद्धव को अपने झूठे ज्ञान का आभास हो जाता है और वे प्रेम की महानता को पहचान जाते हैं।

सतरहवें और अंतिम सर्ग में कवि ने यही दिखाने का प्रयत्न किया है कि व्यक्तिगत प्रेम से ऊंचा विश्व प्रेम होता है। राधा और कृष्ण कभी दुबारा मिल नहीं पाते तथा दोनों ने अपने व्यक्तिगत प्रेम को विश्व प्रेम में परिवर्तित कर दिया। राधा अब मात्र कृष्ण की प्रेमिका नहीं बल्कि वह लोक सेविका बन गई है। उसे ग्रामवासियों की सेवा करने में ही आनंद मिलता है-

संलग्ना हो विविध कितने सांत्वना कार्य में भी।
वे सेवा थी, सतत करती वृद्ध रोगी जनों की।

बोध प्रश्न 3

निम्नलिखित प्रश्नों के तीन पंक्तियों में उत्तर लिखिए-

1) हरिऔध जी के द्वारा प्रिय प्रवास की रचना के पीछे छिपे दो प्रेरक कारणों को बताइए।

.....

.....

.....

2) ''प्रिय प्रवास'' के तीसरे सर्ग का मुख्य वर्णन विषय क्या है?

.....

.....

.....

.....

3) सातवें सर्ग में कवि ने किस बात पर अधिक जोर दिया है?

.....

.....

.....

4) ''प्रिय प्रवास'' रचना में ग्यारहवां सर्ग क्यों महत्वपूर्ण है?

.....

.....

.....

5) सोलहवें सर्ग में कवि ने किस विषय की सार्थकता साबित की है?

.....

.....

.....

6) प्रिय प्रवास रचना की समाप्ति किस रूप में हुई है?

.....

.....

.....

4.6 सारांश

- सन् 1857 की क्रांति के बाद भारतीय नागरिकों नवजागरण का सूत्रपात हुआ। धीरे-धीरे जागरूकता बढ़ती गई। कांग्रेस की स्थापना से लोगों को बल मिला। राष्ट्रीय आंदोलन तेज हुआ। आप तत्कालीन परिस्थितियों को बता सकते हैं।
- सन् 1865 में अयोध्यासिंह उपाध्याय का जन्म हुआ। देश की परिस्थितियों ने उन्हें प्रभावित किया। छोटी उम्र से उन्होंने साहित्य रचना शुरू की। आप कवि के जीवन एवं कृतित्व का परिचय दे सकेंगे।
- विभिन्न गद्य-पद्य रचनाओं के माध्यम से हरिऔध जी ने तत्कालीन राष्ट्रीय एवं विभिन्न समाजिक समस्याओं को उजागर किया। आप उनके साहित्य में व्यक्त इन तत्वों का विश्लेषण कर सकते हैं।
- ''प्रिय प्रवास'' हरिऔध जी की ख्याति प्राप्त कृति है। इसके माध्यम से कवि ने पौराणिक कथा को नया आयाम दिया है। आप इस रचना के कुछ अंश का वाचन करेंगे तथा इसके उद्देश्य को स्पष्ट कर सकते हैं।

4.7 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1, 2, 3 देखें भाग 4.2

4, 5, 6 देखें उपभाग 4.3.1

7, 8, 9, 10, 11 देखें उपभाग 4.3.2

बोध प्रश्न 2

1, 2, 3, 4, 5, 6 देखें भाग 4.4

अभ्यास

अ) देखें भाग 4.4

बोध प्रश्न-3

1, 2, 3, 4, 5, 6 देखें भाग 4.5

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY